शिवाष्टक | By B R Nagina |

आदि अनादि अनंत अखंड, अभेद अखेद सुबेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेस कौ, जोगि-जति-मुनि ध्यान न पावैं॥
आगम-निगम-पुरान सबै, इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

सृजन सुपालन-लय-लीला हित, जो बिधि-हरि-हर रूप बनावैं।
एकहि आप बिचित्र अनेक, सुबेष बनाइ कैं लीला रचावैं॥
सुंदर सृष्टि सुपालन करि, जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

अगुन अनीह अनामय अज, अविकार सहज निज रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन-आभूषन, सजि मुनि-मोहन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल बिधु बिलसै, रतन-हार उर पै लहरावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

अंग बिभूति रमाय मसानकी, बिषमय भुजगनि कौं लपटावैं।
नर-कपाल कर मुंडमाल गल, भालु-चरम सब अंग उढ़ावैं॥
घोर दिगंबर, लोचन तीन, भयानक देखि कैं सब थर्रावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

सुनतहि दीनकी दीन पुकार, दयानिधि आप उबारन धावैं।
पहुँच तहाँ अविलंब सुदारून, मृत्युको मर्म बिदारि भगावैं॥
मुनि मृकंडु-सुतकी गाथा, सुचि अजहुँ बिग्यजन गाई सुनावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

चाउर चारि जो फूल धतूरके, बेलके पात औ पानि चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोल जो, “हर हर महादेव” धुनि जोर लगावैं॥
तिनहिं महाफल देय सदासिव, सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य, दारिद्रय नित्य सुख-सांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब, निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं॥
असरन-सरन काटि भवबंधन, भव निज भवन भव्य बुलवावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

औढरदानि, उदार अपार जु, नैकु-सी सेवा तें ढुरि जावैं।
दमन असांति, समन सब संकट, बिरद बिचार जनहि अपनावैं॥
ऐसे कृपालु कृपामय देव के, क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साम्ब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a4%bf%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%b7%e0%a5%8d%e0%a4%9f%e0%a4%95-by-b-r-nagina/